8 सुनीता की पहिया कुर्सी

सुनीता सुबह सात बजे सोकर उठी। कुछ देर तो वह अपने बिस्तर पर ही बैठी रही। वह सोच रही थी कि आज उसे क्या-क्या काम करने हैं। उसे याद आया कि आज तो बाजार जाना है। सोचते ही उसकी आँखों में चमक आ गई। सुनीता आज पहली बार अकेले बाजार जाने वाली थी।

उसने अपनी टाँगों को हाथ से पकड़ कर खींचा और उन्हें पलंग से नीचे की ओर लटकाया। फिर पलंग का सहारा लेती हुई अपनी पहिया कुर्सी तक बढ़ी। सुनीता चलने-फिरने के लिए पहिया कुर्सी की मदद लेती है। आज वह सभी काम फुर्ती से निपटाना चाहती थी। हालाँकि कपड़े बदलना, जूते पहनना आदि उसके लिए कठिन काम हैं। पर अपने रोज़ाना के काम करने के लिए उसने स्वयं ही कई तरीके ढूँढ़ निकाले हैं।

आठ बजे तक सुनीता नहा-धो कर तैयार हो गई।

माँ ने मेज़ पर नाश्ता लगा दिया था।

"माँ, अचार की बोतल पकड़ाना", सुनीता ने कहा।

"आलमारी में रखी है, ले लो", माँ ने रसोईघर से जवाब दिया। नाश्ता करते-करते उसने पूछा "माँ, बाज़ार से क्या-क्या लाना है?" "एक किलो चीनी लानी है। पर क्या तुम अकेले सँभाल लोगी?"

"पक्का", सुनीता ने मुस्कुराते हुए कहा।

सुनीता ने माँ से झोला और रुपए लिए। अपनी पहिया कुर्सी पर बैठकर वह बाज़ार की ओर चल दी।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सुनीता को सड़क की जिंदगी देखने में मज़ा आता है। चूँकि आज छुट्टी है इसलिए हर जगह बच्चे खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं। सुनीता थोड़ी देर रुक कर उन्हें रस्सी कूदते, गेंद खेलते देखती रही। वह थोड़ी उदास हो गई। वह भी उन बच्चों के साथ खेलना चाहती थी। खेल के मैदान में उसे एक लड़की दिखी, जिसकी माँ उसे वापस लेने के लिए आई थी। दोनों एक-दूसरे को टुकुर-टुकुर देखने लगे।

फिर सुनीता को एक लड़का दिखा। उस बच्चे को बहुत सारे बच्चे "छोटू-छोटू" बुलाकर चिढ़ा रहे थे। उस लड़के का कद बाकी बच्चों से बहुत छोटा था। सुनीता को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।

रास्ते में कई लोग सुनीता को देखकर मुस्कुराए, जबकि वह उन्हें जानती तक नहीं थी। पहले तो वह मन ही मन खुश हुई परंतु फिर सोचने लगी, "ये सब लोग मेरी तरफ़ भला इस तरह क्यों देख रहे हैं?" खेल के मैदान वाली छोटी लड़की सुनीता को दोबारा कपड़ों की दुकान के सामने खड़ी मिली। उसकी माँ कुछ कपड़े देख रही थी।

"तुम्हारे पास यह अजीब सी चीज़ क्या है?" उस लड़की ने सुनीता से पूछा।

"यह तो बस एक पहिया कुर्सी है।" सुनीता ने जवाब दिया। मैं इसी के सहारे चलती-फिरती हूँ। यह कहकर सुनीता आगे बढ़ गई।

सुनीता बाज़ार पहुँच गई। दुकान में घुसने के लिए उसे सीढ़ियों पर चढ़ना था। उसके लिए यह कर पाना मुश्किल था। आस-पास के सब लोग जल्दी में थे। किसी ने उसकी तरफ नहीं देखा। अचानक जिस लड़के को 'छोटू' कहकर चिढ़ाया जा रहा था, वह उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

"मैं अमित हूँ" उसने अपना परिचय दिया, "क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद करूँ?

"मेरा नाम सुनीता है," सुनीता ने राहत की साँस ली और मुस्कुराकर बोली, "पीछे के पैडिल को पैर से ज़रा दबाओगे?

"हाँ, हाँ, ज़रूर" कहते हुए अमित ने पहिया-कुर्सी को टेढ़ा करके उसके अगले पहियों को पहली सीढ़ी पर रखा। फिर उसने पिछले पहियों को भी ऊपर चढ़ाया। सुनीता ने अमित को धन्यवाद दिया और कहा, "अब मैं दुकान तक खुद पहुँच सकती हूँ।"

दुकान में पहुँचकर सुनीता ने एक किलो चीनी माँगी। दुकानदार उसे देखकर मुस्कुराया चीनी की

© RSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

थैली पकड़ने के लिए उसने हाथ आगे बढ़ाया ही था कि दुकानदार ने थैली उसकी गोदी में रख दी। सुनीता ने गुस्से से कहा, "मैं भी दूसरों की तरह खुद अपने आप सामान ले सकती हूँ।"

उसे दुकानदार का व्यवहार बिल्कुल अच्छा नहीं लगा । चीनी लेकर सुनीता और अमित बाहर निकले।

"लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि मैं कोई अजीबोग़रीब लड़की हूँ।" सुनीता ने कहा।

"शायद तुम्हारी पहिया कुर्सी के कारण ही ऐसा व्यवहार करते हैं।" अमित ने कहा।

"पर इस कुर्सी में भला ऐसी क्या खास बात है, मैं तो बचपन से ही इस पर बैठकर इसे चलाती हूँ", सुनीता ने कहा।

अमित ने पूछा, "पर तुम इस पर क्यों बैठती हो?"

"मैं पैरों से चल ही नहीं सकती। इस पहिया कुर्सी के पहियों को घुमाकर ही मैं चल-फिर पाती हूँ लेकिन फिर भी मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ। मैं वे सारे काम कर सकती हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं" सुनीता ने कहा।

अमित ने अपना सिर हाँ में हिलाया और कहा, "मैं भी वे सारे काम कर सकता हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं।

अमित झट से सुनीता की पहिया कुर्सी के पीछे चढ़ गया। फिर दोनों पहिया कुर्सी पर सवार होकर तेज़ी से सड़क पर आगे बढ़े। इस बार भी लोगों ने उन्हें घूरा परंतु अब सुनीता को उनकी परवाह नहीं थी।

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED WEBCOPY

-साभार 'रिमझिम'

(एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली)

शब्दार्थ:

व्यवहार - बर्ताव **अजीबोग़रीब** - अनोखा

घूरना - जोर देकर देखना

अभ्यास

कहानी में से

1. सुनीता सुबह खुश क्यों थी?
2. माँ ने सुनीता को बाज़ार से क्या लाने के लिए कहा?
3. सुनीता को दुकानदार की कौन-सी बात बुरी लगी और क्यों?
4. सुनीता को सब लोग ग़ौर से क्यों देख रहे थे?

बातचीत के लिए

1. सुनीता को सड़क की ज़िंदगी देखने में मज़ा क्यों आता था?
2. अमित को सब छोटू-छोटू कहकर क्यों चिढ़ा रहे थे?
3. सुनीता दुकान में कैसे पहुँची?
4. क्या अमित और सुनीता दोनों बाकी बच्चों से अलग हैं?

मज़ा ही मज़ा

1. **सुनीता को सड़क की ज़िंदगी देखने में मज़ा आता है।**

   आपको किन कामों में मज़ा आता है? तालिका में लिखिए –

   मुझे मज़ा आता है –

   ---------- में मज़ा आता है ।

   ---------- में मज़ा आता है ।

   ---------- में मज़ा आता है ।

2. **बताइए, इन्हें किन चीज़ों में मज़ा आता होगा –**

   मधुमक्खी ----------

   चिड़िया ----------

   मछली ----------

   चींटी ----------

आपके सवाल

नीचे दिए गए अंश को पढ़कर कोई तीन सवाल बनाइए –

माँ ने मेज पर नाश्ता लगा दिया था।

© BSEBBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

"माँ, अचार की बोतल पकड़ाना", सुनीता ने कहा।

"आलमारी में रखी है ले लो।", माँ ने रसोईघर से जवाब दिया।

सुनीता खुद जाकर अचार ले आई।

नाश्ता करते-करते उसने पूछा," माँ बाज़ार से क्या-क्या लाना है?"

"एक किलो चीनी लानी है। पर क्या तुम अकेले सँभाल लोगी?"

"पक्का", सुनीता ने मुस्कुराते हुए कहा।

1. .....
2. .....
3. .....

मैं भी कुछ कर सकती हूँ

1. यदि सुनीता आपके विद्यालय में आए तो उसे किन-किन कामों में परेशानी आएगी?
2. उसे यह परेशानी न हो इसके लिए अपने विद्यालय में आप क्या कुछ बदलाव सुझा सकते हैं?

भाषा की बात

1. पाठ में से तीन-तीन शब्द छाँट कर लिखिए -

- संज्ञा ---------- ---------- ----------
- सर्वनाम ---------- ---------- ----------
- क्रिया ---------- ---------- ----------
- विशेषण ---------- ---------- ----------

2. दिए गए उदाहरण की तरह लिखिए -

माता - पिता

काका ---------- सुनार ----------

चाचा ---------- लुहार ----------

मामा ---------- लेखक ----------

लड़का ---------- गायक ----------

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

3. नीचे दिए गए शब्दों को पढ़िए। इनमें क्या अंतर है-

- साँस – सास
- बाँस – बास
- काँटा – काटा

दिए गए वाक्यों को सही शब्द से पूरा कीजिए –

(क) जंगल में ----------के पेड़ थे। (बास / बाँस)

(ख) सुनीता के पैर में ---------- चुभ गया। (काटा / काँटा)

(ग) सारे हाथी ----------चले गए? (कहा / कहाँ)

(घ) मधु की ----------फूलने लगी थी। (सास / साँस)

(ङ) माँ ने ----------आज बारिश आएगी। (कहा / कहाँ)

4. एक-अनेक

1. रेखांकित शब्दों के रूप बदलकर वाक्यों को दोबारा लिखिए –

(क) सुनीता ने माँ से झोला लिया।

सुनीता ने माँ से झोले लिए।

(ख) आलमारी में अचार की बोतल रखी थी।

.....

(ग) मेरा जूता भींग गया।

.....

(घ) बच्चा मैदान में खेल रहा था।

.....

(ङ) चीनी की थैली फट गई।

.....

5. शब्द एक अर्थ अनेक

सुनीता **मन** में बहुत खुश हुई।

ट्रक में दो **मन** गेहूँ थे।

पहले वाक्य में **मन** का मतलब **दिल** (हृदय) है। जबकि दूसरे वाक्य में **मन** शब्द **तौल** या वज़न के लिए आया है।

© BSTBPC WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED

आप भी ऐसे ही दो-दो अर्थ वाले शब्दों से वाक्य बनाइए –

कल– आने वाला दिन .....

कल– बीता हुआ दिन .....

हार– माला .....

हार– हारना .....

उत्तर– एक दिशा .....

उत्तर– जवाब .....

नाप-तौल

1. **सुनीता ने दुकान से एक किलो चीनी खरीदी। बताइए –**
   - एक किलो में कितने ग्राम होंगे?
   - एक ग्राम में कितने मिली ग्राम होंगे?
2. **नीचे दी गई चीज़ों को आप कैसे नापेंगे? मिलान करें ।**

कपड़ा	किलोग्राम
चावल	मीटर
दूध	लीटर
बच्चे	दर्जन
केले	संख्या

बातचीत के लिए

सुनीता और माँ के बीच हुई बातचीत को आगे बढ़ाइए –

सुनीता– माँ, अचार की बोतल पकड़ाना।

माँ – आलमारी में रखी है ले लो।

सुनीता – माँ, बाज़ार से क्या-क्या लाना है?

माँ ----------

सुनीता ----------

माँ ----------

सुनीता ----------

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

चिट्ठी आई है-

सुनीता के साथ जो हुआ उसके बारे में बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए-

प्रिय

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED